



पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित
जनवरी 2026 | अंक 17

ज्ञान-तंत्र-
संगठन



ई-पत्रिका तक
पहुँचने हेतु QR कोड
को स्कैन करें



मासिक कविता संग्रह

padyapankaj.teachersofbihar.org

चेतना का नव-प्रभात

प्रिय शिक्षा-सारथियों,

जनवरी की यह शीतल बयार इस बार हमारे लिए केवल ऋतु परिवर्तन नहीं, बल्कि त्रिवेणी संगम लेकर आई है। यह संगम है—हमारे साझा प्रयासों के प्रतीक 'Teachers of Bihar' के स्थापना दिवस का, ज्ञान की अधिष्ठात्री माँ शारदे के वंदन का और गणतंत्र के गौरवमयी उत्सव का।

प्रस्तुत है इस पावन अवसर पर कुछ पंक्तियाँ:
स्थापना का संकल्प जगा, नवाचार की गूँज उठी,
बिहार के हर शिक्षक की, अब सोई हुई पहचान जगी।
माँ शारदे के आशीष से, हम ज्ञान-दीप जलाएंगे,
गणतंत्र की इस पावन धरा पर, नया विहान लाएंगे।
एक हाथ में कला-लेखनी, दूजे में संविधान रहे,
मिटे तिमिर अज्ञान का, बस शिक्षा का सम्मान रहे।
'पद्यपंकज' की खुशबू से, चहके बिहार का हर कोना,
गढ़ना है उन्नत भारत, हमें चैन से अब न सोना।

'Teachers of Bihar' का स्थापना दिवस हमें याद दिलाता है कि जब शिक्षक संगठित होकर नवाचार की राह पर चलते हैं, तो समाज में क्रांति आती है। सरस्वती पूजा हमारे भीतर की विनम्रता और सीखने की ललक को जीवित रखती है, तो वहीं गणतंत्र दिवस हमें याद दिलाता है कि हम उन नन्हे हाथों को गढ़ रहे हैं, जिनमें कल के भारत का भविष्य सुरक्षित है।

'पद्यपंकज' का यह जनवरी अंक उन्हीं भावों, कविताओं और संकल्पों की एक सुंदर माला है। आइए, हम सब मिलकर शिक्षा के इस महायज्ञ में अपनी लेखनी और लगन की आहुति दें।

सादर,

Teachers of Bihar





पद्यपंकज काव्य संग्रह

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रकाशन सहयोग

प्रधान संपादक

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कालीगंज
उत्तर टोला, बिहटा

संपादक एवं डिजाइन

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन,
रघुनाथपर, सिवान

तकनीकी सहयोग

ई० शिवेंद्र प्रकाश
सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर,
बिक्रम, पटना

प्रधान संपादक की कलम से



मान रहे गणतंत्र का, रखना सबको ध्यान।
राष्ट्रवाद के मूल में, समता जहाँ विधान।



राष्ट्र-भक्ति वर शारदे, जन-गण हो विद्वान।
कर्म साधना नित सहज, कर पाए इंसान।

वंदे मातरम् मित्रों,

हम मासिक पत्रिका पद्यपंकज की जनवरी अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं, जो गणतंत्र की जयगाथा गाती राष्ट्र-भक्ति से ओत-प्रोत कविताओं को जहाँ अपने अंतर्स में समेटती है वही ऋतुराज बसंत के शुभागमन पर माँ ज्ञान वाणी सरस्वती की भक्ति भावना की सरिता भी बहा रही है। इन सबके बीच हमारे मंच टीचर्स ऑफ बिहार की स्थापना दिवस भी जनवरी में पड़ती है तो भला उसके रंग और उत्साह से हम कैसे अछूते रह सकते हैं।

टीचर्स ऑफ बिहार के सात वर्षों की यात्रा और अनुभवों को शब्दों में पिरोकर हमारे सुधि कलमकार शिक्षकों ने अपने भावों को पन्नों पर उकेरा है। आंग्ल नववर्ष का यह प्रथम माह शीत लहर के बीच में अपने साथ उत्साह, उमंग, श्रद्धा-भक्ति, सहयोग, कर्मठता और राष्ट्रीयता को सहेजे रहा है, जिसे पत्रिका में शामिल रचनाओं को पढ़कर आप स्वतः ही अनुभव करेंगे। हमारे शिक्षकों ने विद्यालय के साथ-साथ समाज को भी दिशा देने का काम बखूबी तन्मयता के साथ किया है।

पत्रिका का यह अंक हमारी अनेकता में एकता, राष्ट्रीयता, कर्मठता और जीवन के विविध रंगों को अपने अंदर इतनी सहजता से समेटे है कि इसके हर शब्द आपके दिल को छू जाएगी। इस पत्रिका में स्थान पाने वाले सभी कलमकारों का भी मैं ऋणी हूँ जिन्होंने अपने सृजन श्रमदान से इसे सुरभित करने में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

प्रिय पाठक वृंद, हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका आपको पसंद आएगी। साथ ही आप सुधि पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि इसे और बेहतर बनाने के लिए आप अगर कोई सुझाव अथवा मार्गदर्शन दें तो मैं स्वयं को धन्य समझूँगा।

प्रयास हमारी, समीक्षा आपकी

सतत् साहित्य से सदा, मिलकर करें प्रयास।

शिक्षा सहज समाज को, देने की ले आस।।

प्रधान संपादक

राम किशोर पाठक



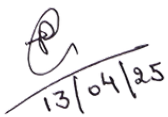
शुभकामना संदेश



"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है—जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।


13/04/25

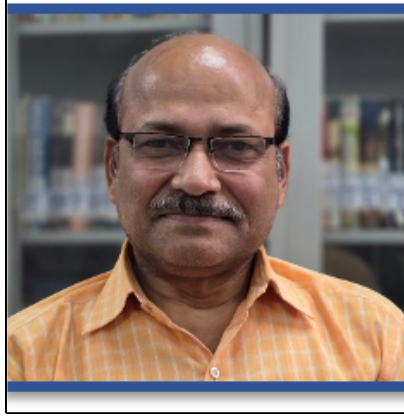
डॉ रश्मि प्रभा

संयुक्त निदेशक

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार



शुभकामना संदेश



“पद्यपंकज” जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं “पद्यपंकज” पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ स्नेहाशीष दास

विभागाध्यक्ष,

विद्यालयी शिक्षा विभाग

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार





अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना का शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	सेना हमारी शान	भवानंद सिंह	8
2	मुझे तिरंगा मां दिलवा दो	राम किशोर पाठक	9
3	तिरंगा हमारी शान है	नीतू रानी	10
4	गणतंत्र दिवस	डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या	12
5	हमारा तिरंगा	मनु कुमारी	13
6	तिरंगा का करें सम्मान	विवेक कुमार	14
7	हमारा देश बना गणतंत्र	ब्यूटी कुमारी	15
8	जन- गण-मन	रुचिका	16
9	गणतंत्र हमारी पहचान है	आशीष अम्बर	17
10	आया है गणतंत्र हमारा	रामकिशोर पाठक	18
11	मैं संविधान हूँ	आंचल शरण	19
12	टीचर्स ऑफ बिहार	मधु कुमारी	20
13	गणतंत्र का जयघोष	मनु कुमारी	21
14	एक हो हम	कार्तिक कुमार	22
15	वन्दन वार सजे शारदा	रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'	23
16	सरस्वती वंदना	राम किशोर पाठक	24
17	वर दे वीणावादिनी	बिन्दु अग्रवाल	25
18	अरज है शारदा से	रागिनी कुमारी	26
19	नारी तू अबला नहीं	ब्रजेश कुमार वर्मा	27
20	जय मां शारदे	डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या	28
21	आया वसंत	आशीष अम्बर	29
22	मैं टीचर्स ऑफ बिहार हूँ	रामकिशोर पाठक	30
22	बिहार के शिक्षक	ब्यूटी कुमारी	31
23	बिहार के शिक्षक	मनु कुमारी	32
22	आओ स्थापना दिवस मनायें	मृत्युंजय कुमार	34
22	टीचर सब बिहार हमारा	एम एस हुसैन कैमूरी	35
22	आओ नूतन गान लिखें	बिन्दु अग्रवाल	36

सेना हमारी शान



सेना हमारे देश की,
आन,बान व शान है,
सेवा समर्पण ही इनकी पहचान है।

देश रहे सुरक्षित,
अखंड और अटूट,
इनमें ही इनका अपना स्वाभिमान है।

गर्व होता इनपर,
देश और समाज को,
हमें हमारे सेना पर बड़ा अभिमान है।

हमसे ना टकराना,
मैं दे रहा पैगाम हूँ,
आँख मत दिखाओ ये नया हिन्दुस्तान है।

भवानंद सिंह (शिक्षक)

मध्य विद्यालय मधुलता रानीगंज, अररिया

मुझे तिरंगा माँ दिलवा दो



मुझे तिरंगा माँ दिलवा दो।
वैसा ही कुर्ता सिलवा दो॥

अम्मा हँसकर लगी बताने।
मुन्ना को भी लगी सजाने॥

भैया संग मुझे भी जाना।
ध्वज मुझको भी है फहराना॥

रंग हरा हरियाली का है।
हम सब की खुशहाली का है॥

मैं भी वहाँ जलेबी खाऊँ।
शाला में मैं गीत सुनाऊँ॥

केसरिया है शौर्य हमारा।
श्वेत कहे हम निर्मल प्यारा॥

बस तुम इतना सा बतला दो।
सुंदर गीत मुझे सीखा दो॥

भारत वासी पर्व मनाएँ।
वंदे मातरम् मिलकर गाएँ॥

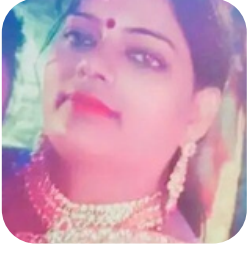
यह दिन क्योंकर अब है आया।
इसमें कैसा राज समाया॥

गणतंत्र दिवस पर खुश हो लो।
भारत माता की जय बोलो

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला,
बिहटा, पटना, बिहार

तिरंगा हमारी शान है



तीन रंग का मेरा झंडा
कितना सुन्दर प्यारा है,
इसको वीर सपूतों ने
मिलकर इसे संवारा है।

देखो ऊपर लहर रहा है
आसमान में फहर रहा है
देश -विदेश में टहल रहा है
कितना सुन्दर न्यारा है।

देखो इसमें तीन रंग हैं
केसरिया, सादा, हरा
बीच में देखो गोल -गोल ये
ब्लू रंग का चक्र बना।

केसरिया साहस वीरता की निशानी
सादा है सच्चाई की,
हरा रंग हरियाली की है
हम सबके लिए खुशियाली की,
बीच में देखो बने चक्र को
इसमें हैं 24 लकीर
ये लकीर दिन रातों की है
जिसपर चलते संत फकीर,
ब्लू रंग सदा सत्य की
राह पर तुम बढ़ते जाओ
पीछे न तुम मुड़कर देखना
यही है इसके सुन्दर प्रतीक।
ये लकीर दिन रातों की है

इस पर है शान मुझे
और इस पर है अभियान मुझे,
अगर आ जाए इसपर कोई संकट
नहीं डर है देने में जान मुझे।

इसको स्वतंत्र करने में
कितने वीरों ने प्राण गंवाई है,
कितनी बहनों ने अपनी
माँग की सिन्दूर मिटाई है।

आओ इनकी जय-जयकार करें हम
और नित्य करें इसे नमन,
इस झंडे के नीचे निर्भय होकर
सब मिल गाएं जन -गण-मन।

नीतू रानी

स्कूल -म०वि० रहमत नगर सदर पूर्णियाँ
बिहार।

गणतंत्र दिवस



गणतंत्र में हो आस्था ,
सुदृढ़ हो व्यवस्था।
नियमों में हो दृढ़ता ,
गणतंत्र की जय गणतंत्र की जय ।
नीतियों का शासन हो ,
कानूनी प्रशासन हो।
रहे सभी अनुशासन हो,
गणतंत्र की जय गणतंत्र की जय ।
जाति पाति सम भाव,
धर्म से ना हो दुरावा।
मानवता से हो लगाओ ,
गणतंत्र की जय गणतंत्र की जय ।
देश का सदा नाम हो ,
गणतंत्र का मान हो ।
अपनी पहचान हो ,
गणतंत्र की जय गणतंत्र की जय ।
एकता अखंडता हो,
नहीं कोई भिन्नता हो।
आपसी समानता हो,
गणतंत्र की जय गणतंत्र की जय।



डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज कटिहार



हमारा तिरंगा



तीन रंगों में बंधा हुआ,
भारत माँ का स्वाभिमान है।
केसरिया बलिदान कहे,
श्वेत शांति की पहचान है।

सीमाओं पर जो प्राण लुटाते,
उनका ऋण कैसे चुकाएँ हम?
तिरंगे के मान की खातिर,
जीवन-दीप सदा जलाएँ हम।

हरित रंग में जीवन बहता,
आशा का मधुर संदेश लिए,
अशोक चक्र की गति बताती,
धर्म-पथ पर अविराम चले।

न जाति रहे, न भेदभाव हो,
एकता का उद्घोष बने।
हर हृदय में तिरंगा बसकर,
भारत का नव घोष बने।

जब-जब लहराए नभ-मंडल में,
सीना गर्व से भर जाता है।
वीरों का इतिहास सुनाकर,
नव भारत को गढ़ जाता है।

आओ शपथ आज हम सब लें,
इस ध्वज को शीश नवाएँगे,
तन-मन-धन अर्पित कर इसके,
सम्मान सदा बढ़ाएँगे।

मनु कुमारी

प्राथमिक विद्यालय दीपनगर बिचारी, राघोपुर, सुपौल

तिरंगा का करें सम्मान



तिरंगा है भारत की शान,
इसमें बसती देश की जान।
केसरिया कहता साहस-त्याग,
श्वेत सिखाता सत्य-ज्ञान।

ना झुके कभी ये आन-बान,
ना होने दें इसका अपमान।
हर घर में हो इसका आदर,
हर दिल में बसे इसका मान।

हरा रंग हरियाली बोले,
खेत-खलिहान, वन-उपवन डोलो।
अशोक चक्र हर पल सिखाए,
रुकना नहीं, आगे ही बढ़ना बोले।

आओ आज ये प्रण हम ठानें,
तन-मन से इसे पहचानें।
कर्म, सेवा, सत्य के पथ पर,
चलकर भारत को महान बनाएं।

इस ध्वज तले सोई कुर्बानी,
हर धागे में अमर कहानी।
वीरों ने हँसकर प्राण दिए,
तब पाई हमने ये आज़ादी।

विवेक कुमार

भोला सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय, पुरुषोत्तमपुर

कुढ़नी, मुज़फ्फरपुर

हमारा देश बना गणतंत्र



राष्ट्र यज्ञ में आहुति देने आया हूं,
मां भारती का भाल सजाने आया हूं,
तिरंगा झंडा लहराने आया हूं।
देश हमारा था परतंत्र,
नहीं चला गोरों का षड्यंत्र,
यातना सह हुआ स्वतंत्र,
हमारा देश बना गणतंत्र।
रखना है अधिकार के
साथ कर्तव्य का ध्यान
कहता है हमारा संविधान,
हमारा देश बना गणतंत्र।
गण का, गण के लिए, गण के
द्वारा चलाया गया तंत्र है गणतंत्र।
जन -गण -मन के गूंजों से
गूंजेगा सारा जहान,
लागू हुआ हमारा संविधान।
करे हम उन वीरों का जयगान,
जिन्होंने न्योछावर किया अपना प्राण,
इतिहास बना उनका बलिदान।
आया आजादी का नव विहान,
लागू हुआ हमारा संविधान,
हमारा देश बना गणतंत्र,
हमारा देश बना गणतंत्र।

ब्यूटी कुमारी

दलसिंहसराय, समस्तीपुर

जन गण मन



जन गण मन जयगान है,
सर्वधर्म समभाव गणतंत्र की पहचान है।
एक राष्ट्र, एक ध्वज
एक ही संविधान है।
देश के लिए हर मन में रहे सम्मान है।
अधिकार और कर्तव्य में
सदा ही रखें सन्तुलन हम।
देश हित सर्वोपरि हो
विकास पथ पर बढ़े सदा कदम।
नियम और कानून का सबको ज्ञान रहे।
भ्रष्टाचार का समूल नाश हो,
हर तरफ ज्ञान का जलता प्रकाश हो।
बेरोजगारी अशिक्षा गरीबी से एकजुट हो लड़े
अनेकता में एकता संग
जय हिंद हर तरफ गुंजयमान रहे।
समतामूलक समाज का निर्माण हो,
हर भाषा का यथोचित सम्मान हो,
लिंग जाति का नही भेद करें हम,
सबको समान अवसर प्रदान हो
भारतवर्ष का चारों ओर यशोगान रहे।

रूचिका

राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुरमौली

गुठनी सिवान बिहार

गणतंत्र हमारी पहचान है



गणतंत्र हमारी पहचान है,
भारत देश हमारा महान है ।
गौतम , गाँधी की धरती पे ,
भारत की शान , पूरी जहान है ।
गणतंत्र हमारी पहचान है,
जिसका नाम हिंदुस्तान है ।
तिरंगा झंडा इसकी शान है,
इसके लिए हमारी जान कुर्बान है ।
अनेकता में एकता ही इसका परिज्ञान है,
जो मेरे भारत की पहचान है ।
हिन्दू – मुस्लिम- सिक्ख – ईसाई,
मिलकर रहें यहाँ सभी इंसान हैं ।
हिमालय पर्वत बढाता इसकी शान है,
गंगा – यमुना पावन नदी करती इसका परित्राण है ।
गणतंत्र हमारी पहचान है,
भारत देश हमारा महान है ।

आशीष अम्बर

उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी, प्रखंड – केवटी

जिला – दरभंगा, बिहार

आया है गणतंत्र हमारा



जन-गण-मन हो सुंदर अपना, आओ प्यारे संग।
आया है गणतंत्र हमारा, भरने नवल उमंग॥

कर्तव्यों को पहले रखकर, फिर पाएँ अधिकार।
अपनी इच्छा संग सभी को, करिए मन से प्यार॥
नियमों को हम ऐसे बांधे, जो लाए नव रंग।
आया है गणतंत्र हमारा, भरने नवल उमंग॥०१॥

प्रेम भरे हो बोल हमारे, थामे सबका हाथ।
सोचें सबके बारे में हम, निज खुशियों के साथ॥
आओ मिलकर हम प्रण ले लें, रहे सदा शुभ ढंग।
आया है गणतंत्र हमारा, भरने नवल उमंग॥०२॥

ध्वजा तिरंगा आसमान में, रहे लहरता शान।
बड़े गर्व से कहता है यह, भारत देश महान॥
संविधान आत्मा हो अपनी, नियम हमारा अंग।
आया है गणतंत्र हमारा, भरने नवल उमंग॥०३॥

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला,
बिहटा, पटना, बिहार

मैं संविधान हूँ



मैं भारत का संविधान हूँ,
महज़ एक किताब नहीं,
गहन करो तो अधिकार हूँ
मैं भारत का संविधान हूँ।
इसमें केवल शब्द नहीं
भारतीयों की तकदीर हूँ
मैं भारत का संविधान हूँ।
करता हूँ बात मैं समानता की
जात पात धर्म की गिरता हुआ दीवार हूँ।
मैं भारत का संविधान हूँ।
भेद भाव ऊँच नीच कोई नहीं
मैं स्त्रियों का सम्मान हूँ
मैं भारत का संविधान हूँ।
राजा हो या रंक यहां
सभी यहां समान है।
मैं भारत का संविधान हूँ
बेशक रहता हूँ मौन मैं
न कोई अशिक्षित रहे न कोई शोषण करे

प्रभुता, एकता, अखंडता
राष्ट्र की पहचान हूँ
मैं भारत का संविधान हूँ
मैं महज़ किताब नहीं,
ज्ञान, समर्पण, विश्वास हूँ।
मैं भारत का संविधान हूँ।
विद्वानों की सोच हूँ बाबा की रचना हूँ
न्यायालय का न्याय हूँ।
मैं भारत का संविधान हूँ।
“मैं संविधान हूँ”
मैं भारत का संविधान हूँ,
महज़ एक किताब नहीं,
गहन करो तो अधिकार हूँ
मैं भारत का संविधान हूँ।
इसमें केवल शब्द नहीं
भारतीयों की तकदीर हूँ
मैं भारत का संविधान हूँ।

आंचल शरण

म. वि. बरेटा संथाल, कसबा पूर्णिया

टीचर्स ऑफ बिहार



एक नाम नहीं
ये है हमारा सम्मान
जिससे मिली पहचान
जो देता एक पैगाम
हमारे आत्मसम्मान के नाम.....

एक ऐसा आन्दोलन
जिसने काले अक्षरों को भी
खूबसूरत और रंगीन बना दिया.....

एक ऐसा लगन
जिसने जीता
अपने उड़ान से
हर शिक्षक का मन....

जहां ना कोई दिखावा
नहीं कोई शोर और अभिमान
जिसने शिक्षकों की
प्रतिभा को जान
दिया उचित पहचान

एक ऐसा आसमान
जहां हमने नित गढ़ा
बुलंदियों से भरा
एक नया “जहां”

जिसने कामयाबी को
किया हमारे नाम
और है जिसकी
सादगी ही पहचान.....

जहां शिक्षक ही हैं
मॉडरेटर, राइटर, एडिटर,
पथ प्रदर्शक, मार्गदर्शक.....
ऐसे “बिहार के शिक्षकों” को सलाम
ये स्थापना दिवस भी करते हैं
उन्हीं शिक्षकों के नाम.....

मधु कुमारी
कटिहार

गणतंत्र का जयघोष



छब्बीस जनवरी पुकार रही,
उठो! इतिहास बुलाता है।
यह दिन नहीं केवल तिथि कोई,
जन-जन का स्वाभिमान जगाता है।

जब टूटीं जंजीरें गुलामी की,
जब भारत ने प्रण यह ठाना था—
राजा नहीं, जनता सर्वोपरि,
यह गणतंत्र का फरमाना था।

संविधान बना पावन ग्रंथ,
न्याय, समानता का आधार।
धर्म, जाति, भाषा से ऊपर,
मानवता का इसमें अधिकार।

यह केवल अधिकार नहीं देता,
कर्तव्य भी हमें सिखलाता है।
जो देश के हित में जी लेता है,
वही सच्चा नागरिक कहलाता है।

लहक उठे तिरंगा जब नभ में,
तो शीश स्वयं ही झुक जाता है।
भारत माँ के चरणों में,
हर हृदय नतमस्तक हो जाता है।

युवाओं! यही समय पुकार रहा,
नारे नहीं—अब काम करो।
ज्ञान, चरित्र, अनुशासन से
भारत का नाम ऊँचा करो।

भ्रष्टाचार, हिंसा, नफरत को
मिलकर आज मिटाना है।
संविधान की शपथ निभाकर
नया भारत बनाना है।

आओ लें यह दृढ़ संकल्प आज—
हम देश नहीं, देश हम हैं।
गणतंत्र की इस पावन बेला में
हम भारत के प्रहरी हम हैं।

जय संविधान! जय गणतंत्र!
जय भारत माँ की शान!
युग-युग तक अमर रहे
मेरा भारत महान!

मनु कुमारी, प्राथमिक विद्यालय दीपनगर
बिचारी, राघोपुर, सुपौल,

एक हो हम



यूजीसी के फैसलों ने सवाल खड़े किए,
छात्रों—शिक्षकों ने सच के दीप जले किए।
स्वर्ण हो या दलित, पिछड़ा आदिवासी,
हक़ की राह में सबकी एक ही प्यास थी।
किताबें बोलती हैं, चुप नहीं रहतीं,
मेहनत की कीमत यूँ ही घटती नहीं।
न ऊँच, न नीच, न जाति की दीवार,
ज्ञान के मंदिर में सबका अधिकार।
रोज़गार, सम्मान—हमारी पहचान,
संविधान बोले: समान हो इंसान।
हाथ में हाथ, क़दम से क़दम,
टूटें भ्रम, बढ़े एकता का दम।
नफ़रत छोड़ो, संवाद रचो,
न्याय की लौ को और प्रखर करो।
एक स्वर में उठे लोकतंत्र की शान,
यूजीसी सुने—बदले विधान।
जाति नहीं, मानवता बने आधार,
एक होकर लिखें नया इतिहास आज।

कार्तिक कुमार

मध्य विद्यालय कटरमाला गोरौल वैशाली

वंदनवार सजे शारदा



ऐसा अब्दुत भोरा

क्षितिज चतुर्दिक दे रहा, अँधी जैसा शोरा
प्रातःकाली भूल कर, पूर्वज ढाड़े लोरा।

कहीं भजन कीर्तन ठने, कहीं राम का बोला
कहीं शारदा सादगी, सह भोजपुरी झोला।

कर्ण भला किसकी सुने, झींगुर पकड़े कोरा
सोए पशु-पक्षी नहीं, जागे होकर बोरा।

मंदिर मस्जिद से नहीं, निःसारित आवाज
ब्रह्म काल में शोर से, तज मन-खग परवाज।

देख सजी पगडंडियाँ, मिली नहीं मग थाहा
आगत-निर्गत शाम दिख, गायें भूली राहा।

कहते कवि "अनजान" यह, कलयुग का है जोरा
गत युगों को मिला नहीं, ऐसा अब्दुत भोरा।



रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'

मध्य विद्यालय दरवेभदौर



सरस्वती वंदना



सुर ताल पल में सहज साध जाऊँ।
मैं जो तुम्हारी चरण धूल पाऊँ॥

रचना सभी छंद पल में करूँ मैं।
हर छंद में प्रीत का स्वर भरूँ मैं॥
कोई सरस गीत पल में सजाऊँ।
मैं जो तुम्हारी चरण धूल पाऊँ॥०१॥

सारे अलंकार रस काव्य में हो।
हर सीख का शब्द संभाव्य में हो॥
जग को सही राह हर-पल दिखाऊँ।
मैं जो तुम्हारी चरण धूल पाऊँ॥०२॥

पाकर तुम्हारी कृपा विज्ञ बनता।
सम्मान का भाव चित खास जनता।
नित वंदना मैं तुम्हें गा सुनाऊँ।
मैं जो तुम्हारी चरण धूल पाऊँ॥०३॥

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला,

बिहटा, पटना, बिहार

वर दे वीणावादिनी



वर दे वीणावादिनी,
जय माँ तू हंसवाहिनी
हृदय तिमिर को मिटा
तू ज्योत ज्ञान की जला।

नीव प्रेम की रखे
जब देह का निर्माण हो,
नव गीत हो, नव ताल हो
हर साँस गुंजायमान हो।

अज्ञानता की कालिमा का
अब ना अट्टहास हो,
दैदिप्यमान हो धरा
प्रकाश ही प्रकाश हो।

भोग विलास को मिटा
योग का आव्हान हो,
सुशोभित हो वसुंधरा
भारत भूमि महान हो।

धर्म मार्ग पे चलें
अधर्म का न वास् हो,
हर लोभ पाप को मिटा
हर हृदय तुम्हारा वास् हो।

दिब्य ज्योत ज्ञान की
जले माँ रात-दिन यहाँ
ज्ञान के प्रकाश से
चमक उठे वसुंधरा।



बिंदु अग्रवाल शिक्षिका

मध्य विद्यालय गलगलिया

किशनगंज, बिहार

अरज है शारदा से



अरज है शारदा से
हे श्वेतपुंज ! हे शारदा!
सुन लो विनय हमारी,
हम दीन-हीन है पातकी
तू पाप पुंज हारी।
अब खोल दो माँ कमल नयन
वरदान दे दो ज्ञान का,
ज्ञान का दीपक जलाऊँ
भाव रखूँ दान का।
संत की सेवा करूँ
सज्जन का हरदम साथ हो,
न कभी हृदय में हो अहम्
बस लोकहित की बात हो।

हे शारदा तु है जहाँ
नहीं लोभ, मोह, न दंभ है,
है धैर्य और सहिष्णुता
जहाँ ज्ञान का स्तंभ है।
यश कीर्ति के भागी बने
सत्मार्ग हमको दिखाए रखना;
इस लिए वीणा धारिणी
अपनी ही धुन में चलाए रखना,
स्पर्श है तेरे चरण
अपनी कृपा बनाए रखना।

रागिनी कुमारी
शिक्षिका

नारी तू अबला नहीं



नारी नहीं तू अबला है
तू ही तो सबला है।
बिन तेरे सब सूना है,
सबकुछ तूने गूना है।
रही नहीं तू चाकरी,
अब तो इसको भांप री।
तू भरणी तू जननी है,
तेरी कहानी कहनी है।
तू दुर्गा सब जानी है,
तू झांसी की रानी है।
तू काली चामुंडा है,
पहने नर-मुंडा है।
तू सरस्वती माता है,
तू ही विद्या दाता है।

तू लक्ष्मी सावित्री है,
तू ही मां गायत्री है।
तू गंगा का रूप है,
सब तेरा स्वरूप है।
तू उमा तू शक्ति है,
देती हमको भक्ति है।
नारी खुद को जान ले,
स्वशक्ति पहचान ले।
स्वशक्ति पहचान ले,
स्वशक्ति पहचान ले।
नारी नहीं तू अबला है,
तू ही तो सबला है।

ब्रजेश कुमार वर्मा

प्राथमिक विद्यालय, पानापुर गोसाईं टोला

मीनापुर

जय मां शारदे



माँ तू अपने शरण में रखो अब सदा,
है नमन कोटि रखना चरण मे सदा.
तू दे दे हमें माँ ये आशीष कदा,
ज्ञान जीवन में सुरभित रहेगा सदा.

जब कभी इस धरा में तिमिर तोम हो
जब कभी देश में रात हो व्योम हो.
सूर्य का तेज देना प्रखर शारदे
जिससे जीवन सफल न्याय समवेत हो।

चरैवेति चरैवेति का कर वरण
रहे निर्मल सदा ही मेरा आचरण
न ही विचलित कभी भी ये मन चित् मेरा,
रहे हरदम सुवासित मेरा आवरण

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या

उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज

कटिहार

आया बसंत



दिन को सूरज लगा चमकने,
हवा लगी अब सरसर बहने ।

पत्ते पीले पड़े पेड़ के,
झड़ते हवा संग हैं उड़ते ।

ऋतु बसंत का स्वागत करने,
नई कोपलें सज गई पेड़ पर ।
सेमल खिलता लाल फूल से,
टेसू फूला डाल – डाल पर ।

नई बौर छा गई आम पर,
महुआ गिरता सुबह टपककर ।
कड़ी ठंड ना गर्मी ज्यादा,
तन – मन फुर्ती से भर जाता ।

कोयल पंचम सुर में गाती,
मीठा मंगल गान सुनाती ।

कूक – कूक कर डाली – डाली,
सबके कानों में कह जाती ।

ऋतु बसंत छाई मतवाली,
कचनारों की छटा निराली ।
सरसों फूली पीली – पीली,
बीच खिली है अलसी नीली ।

सरसों खेत बसंती रंग का,
हवा चली पीला रंग लहरा ।
मेला लगा रंग खुशबू का,
लगता है मानो फाल्गुन का जादू है ।

आशीष अम्बर

उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी, जिला – दरभंगा

मैं टीचर ऑफ बिहार हूँ



शिक्षा का अटल आधार हूँ
मैं टीचर्स ऑफ बिहार हूँ।

बच्चों के कोमल भावों को।
अपनाकर सभी सुझावों को।
शिक्षण का बना व्यवहार हूँ
मैं टीचर्स ऑफ बिहार हूँ॥०१॥

उड़ने को देकर पर सबको।
संशय अंतस का हर सबको।
करता कल्पना साकार हूँ
मैं टीचर्स ऑफ बिहार हूँ॥०२॥

कमियों को दूर किया मैंने।
सबको नित नूर दिया मैंने।
कसे तंज पर मैं प्रहार हूँ
मैं टीचर्स ऑफ बिहार हूँ॥०३॥

गुणवत्ता का बीन बजाया।
पिछड़े को हूँ आगे लाया।
शिक्षा का प्रतिपल सुधार हूँ
मैं टीचर्स ऑफ बिहार हूँ॥०४॥

शिक्षा का हर क्षेत्र सजाया।
दुर्लभ को हूँ सुलभ बनाया।।
संभावना लिए अपार हूँ
मैं टीचर्स ऑफ बिहार हूँ॥०५॥

कुंठा सबकी हरना चाहा।
अच्छे को मैं सदा सराहा।।
अवनि-अंबर का विस्तार हूँ
मैं टीचर्स ऑफ बिहार हूँ॥०६॥

नूतन सपनों को नित गढ़ना।
कदम बढ़ाकर चलते रहना।।
मैं सफलता का संसार हूँ
मैं टीचर्स ऑफ बिहार हूँ॥०७॥



राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला,

बिहटा, पटना, बिहार

बिहार के शिक्षक



बिहार के शिक्षक
नित नई ऊर्जा के साथ
विद्यालय आते
बिहार के शिक्षक।
बच्चों को पढ़ाते
मूल्यों का पाठ
बिहार के शिक्षक।
कर्तव्यनिष्ठ, अनुशासित
बच्चों से रखते
भावनात्मक लगाव
बिहार के शिक्षक।
गीली मिट्टी को आकर
देते बिहार के शिक्षक।
नन्हें पौधों को तरु
बनाते बिहार के शिक्षक।
आम को खास बनाते
बिहार के शिक्षक।

दिशाहीन को नई दिशा
देते बिहार के शिक्षक।
खेल-खेल में बच्चों को
पढ़ाते बिहार के शिक्षक।
विद्यालय को सजाते सवारते
बिहार के शिक्षक।
विद्यालय के बगिया में
सुंदर-सुंदर फूल खिलाते
बिहार के शिक्षक।
बच्चों को शून्य से शिखर तक
पहुंचाते बिहार के शिक्षक।
विश्व पटल पर अपनी पहचान
बनाते बिहार के शिक्षक।

ब्यूटी कुमारी

दलसिंहसराय, समस्तीपुर

बिहार के शिक्षक



टूटी बेंचों, टपकती छतों के बीच
वह शिक्षक खड़ा है—
हाथ में केवल चाक नहीं,
हाथ में बच्चों का भविष्य है।
सीमित साधन, अनगिनत चुनौतियाँ,
फिर भी हार नहीं मानता—
वह TLM से
ज्ञान को जीवंत करता है,
और सीख को अनुभव बनाता है।
कभी कागज़ की नाव से गणित समझाता,
कभी बोटल, पत्थर, तिनके बने औज़ार,
कभी दीवार ही बन गई ब्लैकबोर्ड,
तो कभी ज़मीन पर उकेरे गए अक्षर-आकार।
कभी ताली से गिनती सिखाता है,
कभी कहानी से विज्ञान।
कभी मिट्टी से गणित रचता,
कभी गीतों में इतिहास।
पाठ्यपुस्तक उसकी सीमा नहीं,

कुपोषण, गरीबी, भटकाव, भय और अभाव के बीच,
वह बच्चों को आत्मविश्वास की डोर थमाता है।
वह केवल पढ़ाता नहीं –
वह गढ़ता है –
अक्षरों से स्वप्न,
स्वप्नों से संकल्प,
और संकल्प से चरित्र।
प्रशासनिक बोझ, आदेशों का दबाव,
तकनीकी अंतर, समाज की अपेक्षाएं,
सबके बीच वह बच्चों के मन तक पहुंचता है।
बिहार का शिक्षक आज भी, व्यवस्था से नहीं,
विश्वास से लड़ता है।
हजारों मुसीबत होने के बावजूद
भी कक्षा में
उसकी मुस्कान अडिग रहती है।
वह जानता है
हर बच्चा एक किताब नहीं
एक संभावना है

एक भविष्य है।
जब कोई बच्ची
पहली बार पढ़ना सीखती है,
तो शिक्षक के भीतर
सदियों का संघर्ष
मुस्कुरा उठता है।
बिहार का शिक्षक
केवल पढ़ाता नहीं—

वह गढ़ता है
चरित्र, चेतना और नागरिक।
नवाचार उसका अस्त्र है,
संघर्ष उसकी पहचान,
और शिक्षा उसका धर्म।
सलाम है उस शिक्षक को
जो हर दिन कहता है—
“बच्चे सीखेंगे,
बच्चे बढ़ेंगे।

हर बच्चा, श्रेष्ठ बच्चा!
अप्पन बिहार,
निपुण बिहार,
और यहीं से
बिहार बदल रहा है।
निपुण भारत का लक्ष्य
बहुत जल्द ही पूरा होगा।

मनु रमण चेतना

प्राथमिक विद्यालय दीपनगर बिचारी

राघोपुर, सुपौल

आओ स्थापना दिवस मनाएँ



देखो, सातवाँ स्थापना दिवस है आया,
टीचर्स ऑफ बिहार परिवार में खुशियों का उजास छाया।
सात वर्षों का यह सफर रहा सुहाना,
शिक्षा के क्षेत्र में रचा गया अनगिनत कारनामा।
शिक्षकों और छात्रों के लिए उत्कृष्ट मंच बना,
सबको साथ लेकर आगे बढ़ने का संकल्प सजा।
आओ मिलकर इस यात्रा को यादगार बनाएँ,
घर-घर शिक्षा का अलख जगाएँ।
शिक्षा का अलख हम सब मिलकर जगाएँगे,
टीचर्स ऑफ बिहार को निरंतर आगे बढ़ाएँगे।
शिक्षा के क्षेत्र में गढ़ता है नया आयाम,
टीचर्स ऑफ बिहार कभी नहीं करता विश्राम।
देश-दुनिया में नवाचार आधारित शिक्षा को बढ़ाएँगे,
टीचर्स ऑफ बिहार के कारवाँ को दूर तक लेकर जाएँगे।
आओ मिलकर दीप जलाएँ,
टीचर्स ऑफ बिहार का स्थापना दिवस मनाएँ।



मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय, खुटौना यादव टोला
पताही, पूर्वी चम्पारण



टीचर्स ऑफ बिहार हमारा



आज है , टीओबी का स्थापना दिवस
आईए हम सब मिलकर इसको मनाएं
इसी से होती है हमारी रचनाएं प्रकाशित
जन – जन तक इस बात को पहुंचाएं
कौन करेगा शिक्षकों की रचना प्रकाशित
ये बात सोचकर मन होता सदा विचलित
उधेड़बुन के भंवर से निकाला शिव सर ने
करके टीचर्स ऑफ बिहार को विकसित
इस दिन को मिलकर हम-सब बनाएं खास
इस मंच को सजाने में जिसने किया प्रयास
अपनी सुंदर गतिविधियों से भर दें इसको
रचनाओं के माध्यम से ही करके हर्षोल्लास
जब तक न था ये सुंदर – सा मंच हमारा
हमारी रचनाओं का होता न कहीं गुजारा
जिसने शिक्षकों की प्रतिभा को निखारा
वही तो है , टीचर्स ऑफ बिहार हमारा

एम० एस० हुसैन कैमूरी
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
छोटका कटरा मोहनियां कैमूर

आओ नूतन गान लिखे



आओ नूतन गान लिखें
हम एक नया अभियान लिखें।
अंतरमन के भेद मिटा
हर होठों पे मुस्कान लिखें॥
नये वर्ष में नया गीत
नव कलियों का आव्हान लिखें।
खिलता फूल हो, उड़ता सौरभ
हर आँगन को गुलफाम लिखें॥
नन्हों को दे स्नेहाशीषबैँड
कमजोरों का हम मान लिखे।
साथ सभी के मिला कदम हम
बुजुर्गों का सम्मान लिखें॥
हर आँखों में हम प्रेम लिखें
हर दिल में हम सदभाव लिखें।
ना कटु वचन कहे कोई यहाँ
हर में यह अरमान लिखें॥
देश धर्म पर मिटने वाले
वीरों को प्रणाम लिखें।
अखिल विश्व में गूंजे जयकारा
मेरा देश महान लिखें॥



बिंदु अग्रवाल, शिक्षिका
मध्य विद्यालय गलगलिया
किशनगंज बिहार





पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप के माध्यम से जुड़े।

✉ writers.teachersofbihar@gmail.com
🌐 padyapankaj.teachersofbihar.org
📞 +91 7250818080 | +91 9650233010

Reg. No. BR/2025/0487469



पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें

